पत्र सूचना कार्यालय

भारत सरकार

नई दिल्ली

9 मार्च, 2015

वर्ष 2015-16 में पूरा होने वाले दिल्ली में शेर शाह गेट का मरम्मत/पुनरुद्धार कार्य

दिल्ली में शेर शाह गेट की आवश्यक मरम्मत/पुनरुद्धार कार्य शुरू किया गया है और यह प्रगति पर है। यह कार्य अगले वित्तीय वर्ष 2015-16 में पूरा होने वाला है। गेट के उपरोक्त हिस्से के ढहने के बाद एक ईंट की दीवार को भवन के आलंब के लिए स्थापित किया था और विस्तृत प्रलेखन किया जा चुका है।

शेर शाह गेट का एक छोटा हिस्सा वर्ष 2012 में भारी वर्षा के कारण गिर गया था।

यह सूचना संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार), पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं नागर विमानन केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ महेश शर्मा द्वारा आज लोकसभा में एक अतारांकित प्रश्न के उत्तर में दी गयी।

संग्रहालय लोकप्रिय व्याख्यान एवं वृत्तचित्र प्रदर्शनी

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ने आज रॉक-आर्ट शेल्टर सम्मेलन हॉल में फ्रेंच-अमेरिकन फोटोग्राफर जूली वेन द्वारा ''धरती से धरती तक-तमिलनाडु में भक्ति और टेराकोटा अर्पण'' का लोकप्रिय व्याख्यान और वृत्तचित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई।

वेन ने अपने 35 मिनट लंबे वृत्तचित्र 'धरती से धरती तक : तमिलनाडु में भक्ति और टेराकोटा अर्पण' का प्रदर्शन किया और बाद में अय्यनार संप्रदाय पर व्याख्यान दिया। वर्ष 1999 से 2010 तक फोटोग्राफर के रूप में एक सफल जीविका के साथ-साथ उन्होंने दक्षिण भारत की परंपरागत, समृद्ध और लोकप्रिय कला हेतु एक शो केस पेरिस गैलरी शंतला संचालित किया। सुश्री वेन ने कहा-''तमिलनाडु में मेरी लगातार यात्रा के दौरान अय्यनार को समर्पित एक जीर्ण-शीर्ण मंदिर को खोज निकाला और प्रसाद तथा मंदिर की अद्धितीय और आंतरिक सौन्दर्य की ओर तुरंत आकर्षित हुई। मुझे जिज्ञासा हुई और ऐसे बहुत ही अल्पख्यात इस अय्यनार संप्रदाय के मूर्त और अमूर्त पक्षों की खोज और तलाश की दस वर्ष की यात्रा शुरू हुई।

अय्यनार मंदिरों का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा ''यह कुम्हारों की अंतिम पीढ़ी होगी जो वार्षिक समारोह में अय्यनार मंदिरों में चढ़ाने के लिए टेराकोटा मूर्तियां बनाते हैं। मैंने सैंकड़ों अय्यनार मंदिरों का

दौरा किया है और देखा कि प्रत्येक गांव में इन धार्मिक मूर्तियों का अपना स्वरूप है। उन्होंने यह भी कहा कि ''जमीनी स्तर पर ये मंदिर विलुप्त होने के कगार पर हैं।''

फ्रेंच - अमेरिकन फोटोग्राफर जूली वेन ने अय्यनार के सत्तर से अधिक मंदिरों को खोज निकाला सर्वेक्षण और प्रलेखन किया है। पचास से अधिक उत्सवों में भाग लिया और कुम्हारों तथा उनके पवित्र शिल्प को देखने और रिकार्ड करने के लिए अनगिनत घंटे बिताए। उनकी दृश्यात्मक और बौद्धिक जिज्ञासा इसकी ओर बढ़ी और उन्होंने बहुत ही अल्पख्यात इस अय्यनार संप्रदाय के मूर्त और अमूर्त पक्षों की खोज और तलाश की दस वर्षीय यात्रा की शुरूआत की।

आपसे अनुरोध है कि कृपया इस समाचार रिपोर्ट को आपके मान्यता प्राप्त समाचार पत्र में प्रकाशित किया जाए।

भवदीय
(अशोक कुमार शर्मा)
पीआरओ
942501930